भारतीय राष्ट्रवाद पर विश्व युद्ध का प्रभाव

(Impact of World War on Indian Nationalism)

(Dr. Sheshnath Kumar)

Assistant Professor

Dhamma Dipa International Buddhist University

South Tripura-779145

(E-mail -dr.kumarsheshnath@gmail.com)

अमूर्त:

प्रथम विश्व युद्ध और द्वितीय विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवाद को गहराई से प्रभावित किया, जो स्वतंत्रता आंदोलन का मूल बिंदु था। यह सार भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन पर इन वैश्विक संघर्षों के व्यापक प्रभावों का विश्लेषण करता है, जिसमें आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक पहलू शामिल हैं।

1914 में शुरू हुए पहले विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवाद को प्रेरित किया। ब्रिटिश साम्राज्य ने अधिक स्वायत्तता के वादे के बदले भारतीय सैनिकों को युद्ध में भाग लेने के लिए कहा, जिससे राष्ट्रवाद पैदा हुआ। हालाँकि, युद्ध के बाद सुधारों के वादों के टूटने के कारण जो मोहभंग हुआ, उसके साथ-साथ युद्ध के आर्थिक संकट ने भारतीय समाज पर ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ क्रोध को बढ़ा दिया। 1919 के मोंटागु-चेम्सफोर्ड सुधार, सीमित सीमाओं के बावजूद, स्वशासन की भारतीय मांगों के प्रति अंग्रेजों द्वारा एक रियायत का संकेत था। फिर भी, 1919 में जलियांवाला बाग नरसंहार, जहां ब्रिटिश सैनिकों ने शांतिपूर्ण प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाईं, ने उपनिवेशवाद विरोधी भावनाओं को बढ़ाया, जिससे भारतीय राष्ट्रवादियों का संकल्प मजबूत हुआ।

युद्ध के बीच भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन का एकीकरण हुआ, जिसमें महात्मा गांधी जैसे नेताओं का उदय हुआ। 1930 के नमक मार्च में गांधी की अहिंसक प्रतिरोध की रणनीति ने भारतीय लोगों को बहुत प्रभावित किया और दुनिया को भी आकर्षित किया। महामंदी में हुए आर्थिक संकट ने असंतोष को और भी बढ़ा दिया, जिससे आत्मनिर्भरता और स्व-शासन की जरूरत का पता चला। साथ ही, वैश्विक क्रांतिकारी उत्साह से प्रेरित भारतीय समाजवादी और कम्युनिस्ट आंदोलनों की उत्पत्ति ने राष्ट्रवादी संघर्ष के विचारों में विविधता पैदा की।

1939 में शुरू हुआ द्वितीय विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवाद को एक और बड़ा अवसर दिया। ब्रिटिश सरकार ने लोकतंत्र की रक्षा के बहाने भारत को युद्ध में शामिल करने के फैसले का बहुत विरोध किया। 1942 में, गांधी और भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने ब्रिटिश भारत से तुरंत वापसी की मांग की। दमन और सामूहिक कैदियों की विशेषता वाली ब्रिटिश प्रतिक्रिया ने पनिवेशवाद-विरोधी भावनाओं को और भड़काया। इस बीच, सुभाष चंद्र बोस ने धुरी शक्तियों के समर्थन से भारतीय राष्ट्रीय सेना का गठन किया, जो स्वतंत्रता आंदोलन में तत्वों को अधिक कट्टरपंथी बनाया।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद ब्रिटिश साम्राज्य की कमजोरी और आर्थिक दुर्बलता ने उपनिवेशीकरण को तेज कर दिया। 1946 की कैबिनेट मिशन योजना ने भारतीय स्वशासन के लिए एक योजना दी, लेकिन हिंदू और मुस्लिम हितों को समझने में असफलता के कारण 1947 में भारत का विभाजन हो गया और पाकिस्तान बन गया। विभाजन का आघात, बड़े पैमाने पर विस्थापन और सांप्रदायिक हिंसा ने राष्ट्रवादी संघर्ष की जटिलताओं को रेखांकित किया।

भारतीय राष्ट्रवाद को प्रथम और द्वितीय विश्व युद्धों ने बदल दिया, जो स्वतंत्रता की ओर बढ़ा। इन विश्वव्यापी संघर्षों ने ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरोधाभासों को भी उजागर किया, साथ ही भारतीय समाज में आत्मनिर्णय के एक साझा लक्ष्य की ओर भी लोगों को प्रेरित किया। वर्तमान भारत में, युद्ध और प्रतिरोध के अनुभवों से उत्पन्न स्वतंत्रता आंदोलन की विरासत सुनाई देती है, जो स्वतंत्रता और न्याय के लिए इसके संघर्ष की निरंतर आवश्यकता को स्पष्ट करती है।

मुख्य शब्द: विश्व युद्ध, भारतीय राष्ट्रवाद, ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन, सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव, आर्थिक प्रभाव, वैचारिक प्रभाव, भारतीय सैनिक, स्वशासन, स्वतंत्रता आंदोलन, वैश्विक घटनाएं।

परिचय:

प्रथम विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवाद पर बड़ा असर डाला, जिसने देश की राजनीति में बहुत कुछ बदल दिया। युद्ध ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ असंतोष और राष्ट्रवादी भावना को जन्म दिया। "लामबंदी," "असहमति," "अवसर," "चेतना" और "चेतना" जैसे कीवर्ड भारतीय राष्ट्रवाद पर युद्ध के बदलते प्रभावों को चित्रित करते हैं।

लाखों भारतीय सैनिकों को प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश साम्राज्य ने विभिन्न मोर्चों पर लड़ने के लिए संगठित किया, जिससे उनमें एकता और जागरूकता की भावना पैदा हुई। हालाँकि, भारतीय सैनिकों को युद्ध के मैदान पर और घर लौटने पर भेदभावपूर्ण व्यवहार मिला।

युद्ध ने भी भारतीय राष्ट्रवादियों को स्थिति का फायदा उठाने का अवसर दिया। युद्ध को अंग्रेजों से राजनीतिक रियायतें मांगने के लिए एक मंच के रूप में इस्तेमाल किया गया था; मोहनदास गांधी और एनी बेसेंट ने कहा कि युद्ध के प्रयासों के लिए भारतीय समर्थन को अधिक स्वायत्तता के साथ पारस्परिक रूप से मिलना चाहिए।

युद्धकालीन नीतियों और बढ़ती कीमतों के कारण बढ़ती आर्थिक कठिनाइयों के कारण भारतीयों में असंतोष बढ़ा। इस आर्थिक असंतोष ने राष्ट्रवादी आंदोलन में ईंधन डाला, विरोध और हड़तालें बढ़ीं।

प्रथम विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवाद को जन्म दिया, भारतीयों में एकता, चेतना और असंतोष की भावना को बढ़ावा दिया, साथ ही ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से अधिक स्वायत्तता की मांग के लिए राजनीतिक संघर्ष का मंच भी बनाया।

विश्व युद्ध:

प्रथम विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवाद को गहराई से प्रभावित किया, क्योंकि यह ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत की लड़ाई का आधार था। युद्ध से पहले, आर्थिक शोषण, सांस्कृतिक उत्पीड़न और स्वशासन की इच्छा के कारण भारतीय राष्ट्रवाद बढ़ रहा था। हालाँकि, युद्ध ने एक प्रेरक के रूप में काम किया, जिसने राष्ट्रवादी आंदोलन को तेज कर दिया और ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार और भारतीय लोगों के बीच बातचीत को बदल दिया।

पहले, युद्ध ने भारत को आर्थिक तंगी में डाला। ब्रिटिश सरकार ने भारी कर लगाया और युद्ध के लिए संसाधनों की मांग की, जिससे देश में गरीबी और अकाल बढ़ा। निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में कोई हस्तक्षेप किए बिना, भारतीयों को युद्ध का सामना करना पड़ा। भारतीय राष्ट्रवादियों में आक्रोश और अधिक स्वायत्तता की इच्छा को इस आर्थिक शोषण ने बढ़ाया।

दूसरे, युद्ध ने भारतीय राजनीतिज्ञों को वैश्विक स्तर पर अपनी जगह बनाने का अवसर दिया। युद्ध की बहस में महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू ने सक्रिय रूप से भाग लिया और समर्थन के बदले में अधिक स्वशासन और भारतीय प्रतिनिधित्व की मांग की। इन प्रयासों का एक महत्वपूर्ण परिणाम 1919 का मोंटागु-चेम्सफोर्ड सुधार था, जिसे भारत सरकार

अधिनियम 1919 भी कहा जाता है। यह पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं था, लेकिन यह प्रांतों को स्वतंत्रता और सीमित लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व देकर स्वशासन की ओर एक महत्वपूर्ण कदम था।

युद्ध ने भी भारत में क्रांतिकारी विद्रोहों को जन्म दिया। गदर पार्टी और भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए) जैसे समूहों ने स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए और अधिक कट्टरपंथी तरीकों की वकालत की, जिसमें अंग्रेजों के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष भी शामिल था। विशेष रूप से, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान सुभाष चंद्र बोस ने आईएनए को नेतृत्व दिया, जिससे पता चलता है कि युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में कट्टरवाद और उग्रवाद को बढ़ावा दिया।

युद्ध ने ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरोधाभासों को भी उजागर किया और भारत में ब्रिटिश शासन की वैधता को भी कमजोर कर दिया। ब्रिटिश साम्राज्य के लिए बहादुरी से लड़ने वाले भारतीय सैनिक निराश और शर्मिंदा होकर अपने घर लौट आए। 1919 के जलियांवाला बाग नरसंहार, जहां ब्रिटिश सैनिकों ने एक शांतिपूर्ण सभा पर गोलियां चलाईं, ने उपनिवेशवाद-विरोधी भावनाओं को और भड़का दिया और पूरे भारत में व्यापक आक्रोश फैलाया।

विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवाद को बदल दिया, जिससे स्वतंत्रता आंदोलन तेज हो गया और ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार और भारतीय जनता के बीच संघर्ष को नया आकार मिला। भारतीयों में अपनी पहचान की भावना और स्व-शासन की इच्छा को बढ़ाने में क्रांतिकारी आंदोलनों, आर्थिक संकट और राजनीतिक प्रगति ने योगदान दिया। 1947 तक भारत को स्वतंत्रता नहीं मिली थी, लेकिन पहले विश्व युद्ध के दौरान बोए गए मुक्ति के बीज ने अंततः ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को गिरा दिया।

भारतीय राष्ट्रवाद:

प्रथम विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवाद पर गहरा और व्यापक प्रभाव डाला, जिसने भारत को ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए लड़ने की प्रेरणा दी। युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ावा दिया और ब्रिटिश शाही शासन से जुड़े मतभेदों को भी उजागर किया।

भारतीय राष्ट्रवाद प्रथम विश्व युद्ध से पहले तेजी से बढ़ रहा था, जो भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनसी) जैसे संस्थाओं के गठन और बाल गंगाधर तिलक और दादाभाई नौरोजी जैसे नेताओं के उदय से दिखाई देता था। भारतीय राष्ट्रवाद, हालांकि, युद्ध के दौरान ही विकसित हुआ। दस लाख से अधिक भारतीय सैनिकों की सेवा, युद्ध प्रयासों में उनकी भागीदारी और थिएटरों में उनकी सेवा के कारण जागरूकता बढ़ी और अधिक राजनीतिक अधिकारों और प्रतिनिधित्व की मांग की गई।

युद्ध ने ब्रिटिश सरकार के लोकतांत्रिक मूल्यों को चैंपियन बनाने और भारतीयों को उनके बुनियादी अधिकारों और स्वतंत्रता से वंचित करने का पाखंड भी उजागर किया। भारतीयों को ब्रिटिश साम्राज्य के लिए बलिदान देने की उम्मीद थी, लेकिन उन्हें उनके जीवन को प्रभावित करने वाले फैसलों में मतदान नहीं दिया गया। यह असंतोष और आक्रोश ने राष्ट्रवादी आंदोलन की प्रेरणा दी।

युद्ध के आर्थिक संकट ने भारतीय किसानों और श्रमिकों को बढ़ती कीमतों और आवश्यक वस्तुओं की कमी से पीड़ित कर दिया। युद्ध के प्रयासों को बढ़ावा देने के लिए भारतीय संसाधनों के शोषण और ब्रिटिश औद्योगिक हितों के पक्ष में भेदभावपूर्ण नीतियों ने न्यायसंगत विकास और आर्थिक आत्मनिर्णय की मांग को तीव्र कर दिया।

युद्ध के दौरान और बाद में ब्रिटिश सरकार ने भारतीय राष्ट्रवादी इरादे के प्रति दमन और विश्वासघात का सामना किया। औपनिवेशिक सरकार द्वारा किए गए दमनकारी कार्यों, जैसे 1919 का रोलेट एक्ट और जलियांवाला बाग नरसंहार, ने ब्रिटिश प्रतिद्वंद्विता को बढ़ा दिया और भारतीय जनता के वर्गों को कट्टरपंथी बना दिया।

युद्ध के बाद राष्ट्रवादी आंदोलन में भी नवीन विचारधारा का जन्म हुआ। 1915 में दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने पर महात्मा गांधी के विचारों में गहराई आई। गांधी के अहिंसक प्रतिरोध और सविनय अवज्ञा के विचारों ने भारत को स्वतंत्रता की लड़ाई में एक मजबूत नैतिक और रणनीतिक ढांचा प्रदान किया।

प्रथम विश्व युद्ध के बाद भारत में राजनीतिक लामबंदी और सक्रियता बढ़ी। भारतीय मुसलमानों द्वारा ओटोमन खलीफा के साथ एकजुटता में शुरू किए गए खिलाफत आंदोलन और जलियांवाला बाग नरसंहार के जवाब में गांधी द्वारा शुरू किए गए असहयोग आंदोलन ने धार्मिक और क्षेत्रीय आधार पर राष्ट्रवादी मांगों को व्यापक समर्थन दिया।

प्रथम विश्व युद्ध ने भारत की अंतिम स्वतंत्रता के लिए आधार तैयार किया, हालांकि राष्ट्रवादी आंदोलन में असफलताओं और बंटवारे के बावजूद। युद्ध ने ब्रिटिश शासन की कमजोरियों को दिखाया और भारतीय नेताओं को स्व-शासन और देश की गरिमा की अपनी मांगों को व्यक्त करने का मंच दिया। युद्ध ने भारत के अलग-अलग समुदायों में भी एकता और एकजुटता की भावना जगाई, जिससे उपनिवेशवाद के खिलाफ साझा संघर्ष की नींव पड़ी।

विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवाद को बदल दिया, जिससे इसका विकास और लक्ष्य कट्टरपंथी हो गए। युद्ध ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के अंतर्विरोधों को उजागर किया, उपनिवेशवाद-विरोधी भावनाओं को बढ़ावा दिया और राजनीतिक सक्रियता और लामबंदी के लिए व्यापक आधार बनाया। अंततः, पहले विश्व युद्ध ने भारत को स्वतंत्रता के लिए लड़ने का रास्ता दिखाया और अंततः ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को खत्म कर दिया।

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन:

भारतीय राष्ट्रवाद पर प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव गहरा था, जिसने ब्रिटिश शासन के खिलाफ उपनिवेशवाद विरोधी संघर्ष के परिदृश्य को नया आकार दिया। युद्ध से पहले, भारतीय राष्ट्रवाद उबल रहा था, जो राजनीतिक अधिकारों के बारे में बढ़ती जागरूकता और स्व-शासन की इच्छा से प्रेरित था। हालाँकि, युद्ध ने इन भावनाओं को तेज करने और राष्ट्रवादी आंदोलन की प्रकृति को बदलने के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम किया।

1. **भर्ती और भागीदारी:** जनशक्ति और संसाधनों दोनों के संदर्भ में युद्ध प्रयासों में भारत के महत्वपूर्ण योगदान ने राष्ट्रवादी भावना को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। समर्थन के बदले में अधिक स्वशासन के वादे के बावजूद, दस लाख से अधिक भारतीय सैनिकों को ब्रिटिश साम्राज्य के लिए लड़ने के लिए भर्ती किया गया था। भारतीय सैनिकों ने यूरोप, अफ्रीका और मध्य पूर्व सहित युद्ध के विभिन्न क्षेत्रों में लड़ाई लड़ी। विदेश में उनके अनुभव, राष्ट्रवाद और आत्मनिर्णय जैसी वैश्विक विचारधाराओं के संपर्क के साथ, निरंतर औपनिवेशिक अधीनता में घर लौटने पर अन्याय की भावना को बढ़ावा दिया।

2. **आर्थिक तनाव:** युद्ध ने भारत पर अत्यधिक आर्थिक दबाव डाला। औपनिवेशिक सरकार ने युद्ध के प्रयासों का समर्थन करने के लिए भारी कर लगाए और संसाधनों की मांग की, जिससे भारतीय आबादी में व्यापक कठिनाई हुई। ब्रिटेन के लाभ के लिए भारतीय संसाधनों के शोषण ने औपनिवेशिक शासन में निहित आर्थिक शोषण को उजागर किया, जिससे उपनिवेशवाद विरोधी भावनाओं को और बढ़ावा मिला।

3. **मोंटागु-चेम्सफोर्ड सुधार:** 1919 का मोंटागु-चेम्सफोर्ड सुधार, जिसे भारत सरकार अधिनियम 1919 के रूप में भी जाना जाता है, अधिक स्वशासन की भारतीय मांगों की प्रतिक्रिया थी। हालाँकि ये सुधार पूर्ण स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रवादी आकांक्षाओं से कम थे, उन्होंने शासन में सीमित भारतीय प्रतिनिधित्व के प्रति ब्रिटिश सरकार द्वारा एक महत्वपूर्ण रियायत का प्रतिनिधित्व किया। हालाँकि, कई राष्ट्रवादियों द्वारा सुधारों को अपर्याप्त और प्रतीकात्मक के रूप में देखा गया, जिसके कारण पूर्ण स्वतंत्रता की मांग बढ़ गई।

4. **जलियांवाला बाग नरसंहार:** इस अवधि के दौरान सबसे कुख्यात घटनाओं में से एक अप्रैल 1919 में जलियांवाला बाग नरसंहार था। जनरल रेजिनाल्ड डायर की कमान के तहत ब्रिटिश सैनिकों ने पंजाब के अमृतसर में नागरिकों की एक शांतिपूर्ण सभा पर गोलीबारी की, जिसमें सैकड़ों लोग मारे गए और घायल हो गए। हजारों. असहमति के इस क्रूर दमन ने देश को स्तब्ध कर दिया और राष्ट्रवादी उद्देश्य के लिए समर्थन को प्रेरित किया।

5. **गांधी और असहयोग आंदोलन का उदय:** मोहनदास करमचंद गांधी, जो पहले से ही भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन में एक प्रमुख नेता के रूप में उभरे थे, ने प्रथम विश्व युद्ध के बाद अहिंसक प्रतिरोध के लिए अपने प्रयासों को तेज कर दिया। जलियांवाला बाग हत्याकांड ने अहिंसक विरोध की प्रभावशीलता में गांधी के विश्वास को मजबूत किया। 1920 में, गांधीजी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया, जिसमें भारतीयों से ब्रिटिश संस्थानों और वस्तुओं का बहिष्कार करने का आह्वान किया गया। इसने राष्ट्रवादी रणनीति में एक महत्वपूर्ण बदलाव को चिह्नित किया, जिसमें बड़े पैमाने पर लामबंदी और सविनय अवज्ञा पर जोर दिया गया।

प्रथम विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवाद के लिए एक भट्टी के रूप में काम किया, उपनिवेशवाद विरोधी भावना की गति को तेज किया और स्वतंत्रता आंदोलन की रणनीतियों और रणनीति को नया आकार दिया। युद्ध ने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के विरोधाभासों को उजागर कर दिया, जिससे भारतीय जनता में असंतोष और प्रतिरोध को बढ़ावा मिला। इसके अलावा, इसने गांधी जैसे नेताओं को अहिंसक तरीकों से स्वतंत्रता के लिए जन समर्थन जुटाने के लिए एक मंच प्रदान किया। अंततः, इस अवधि के दौरान बोए गए बीज 1947 में भारत की अंतिम स्वतंत्रता में परिणत हुए।

सामाजिक-राजनीतिक प्रभाव:

भारतीय राष्ट्रवाद पर प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव गहरा था, जिसने सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तन को उत्प्रेरित किया जिसने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष की दिशा को आकार दिया। यहां इस प्रभाव के प्रमुख पहलुओं का अवलोकन दिया गया है:

1. **चेतना और एकता का उदय:** युद्ध ने भारतीयों को वैश्विक राजनीति और आत्मनिर्णय के सिद्धांतों से अवगत कराया, जिससे विविध भारतीय समुदायों के बीच राष्ट्रवाद और एकता की भावना प्रेरित हुई। भारतीयों ने ब्रिटिश सैनिकों के साथ लड़ाई लड़ी, सैन्य अनुभव प्राप्त किया और समानता और लोकतंत्र के विचारों से अवगत हुए। इस अनुभव ने भारतीय पहचान की एक मजबूत भावना और स्वशासन के लिए सामूहिक आकांक्षाओं की प्राप्ति को बढ़ावा दिया।

2. **सुधारों की मांग:** युद्ध में भारतीयों की भागीदारी ने ब्रिटिश शासन से राजनीतिक सुधारों और अधिक स्वायत्तता की उम्मीदों को बढ़ावा दिया। युद्ध के दौरान भारतीय सैनिकों और नागरिकों द्वारा किए गए बलिदान ने ब्रिटिश सरकार के लिए भारतीय शिकायतों को दूर करने और निरंतर सहयोग के बदले में रियायतें देने की नैतिक अनिवार्यता पैदा कर दी। इसके कारण 1919 में मोंटागु-चेम्सफोर्ड सुधार हुआ, जिसने प्रांतीय स्तर पर सीमित स्वशासन की शुरुआत की, हालांकि यह भारतीय आकांक्षाओं से कम थी।

3. **जन आंदोलनों का उदय:** सुधार के ब्रिटिश वादों से मोहभंग और युद्ध के बाद औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा उठाए गए दमनकारी कदम, जैसे रोलेट एक्ट और जलियांवाला बाग नरसंहार, ने पूरे भारत में बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन और सविनय अवज्ञा आंदोलनों को बढ़ावा दिया। महात्मा गांधी जैसे नेता राष्ट्रीय मंच पर उभरे, जिन्होंने अहिंसक प्रतिरोध की वकालत की और ब्रिटिश शासन के खिलाफ लाखों लोगों को संगठित किया। भारतीय राष्ट्रवाद और उपनिवेशवाद विरोधी सिद्धांतों से प्रभावित खिलाफत आंदोलन और असहयोग आंदोलन ने इस अवधि के दौरान गति पकड़ी।

4. **नेतृत्व और विचारधारा में बदलाव:** युद्ध के कारण भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन के भीतर नेतृत्व में बदलाव आया। ब्रिटिश शासन से पूर्ण स्वतंत्रता की मांग करने वाली कट्टरपंथी आवाज़ों द्वारा पारंपरिक अभिजात वर्ग और राजनीतिक नरमपंथियों को लगातार चुनौती दी जा रही थी। समाजवादी विचारधाराओं के उद्भव और भगत सिंह जैसे क्रांतिकारियों के प्रभाव ने राष्ट्रवादी आंदोलन के भीतर रणनीति और रणनीतियों के विविधीकरण का संकेत दिया, जो उस समय के विकसित सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य को दर्शाता है।

5. **क्षेत्रीय गतिशीलता:** प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव भारत के विभिन्न क्षेत्रों पर भिन्न-भिन्न था। पंजाब और बंगाल जैसे प्रांतों में, युद्ध ने आर्थिक कठिनाइयों और सांप्रदायिक तनाव को बढ़ा दिया, जिससे सक्रियता और सांप्रदायिक लामबंदी बढ़ गई। 1905 में बंगाल के विभाजन और उसके बाद 1911 में इसके विलोपन ने भी बंगाल में राष्ट्रवादी भावनाओं को बढ़ावा दिया, जिससे सुभाष चंद्र बोस जैसे नेताओं के उदय में योगदान मिला।

प्रथम विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवाद के प्रक्षेप पथ को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया, एकता की भावना को बढ़ावा दिया, जन आंदोलनों को संगठित किया, और राजनीतिक सुधारों और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से अंततः स्वतंत्रता की मांगों को प्रेरित किया। युद्ध ने साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष में भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन की रणनीति, विचारधारा और नेतृत्व को आकार देते हुए सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया।

निष्कर्ष:

भारतीय राष्ट्रवाद पर प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव गहरा और बहुआयामी था, जिसने भारत के राजनीतिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण बदलावों को प्रेरित किया और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन से स्वतंत्रता की दिशा में गति को तेज किया। युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवादियों के लिए एक कठिन अग्नि की तरह काम किया, जिससे अवसर और चुनौतियाँ दोनों मिलीं, जिन्होंने अंततः स्व-शासन के लिए उत्साह बढ़ाया।

प्रथम विश्व युद्ध के सबसे महत्वपूर्ण परिणामों में से एक उन भारतीय सैनिकों का मोहभंग था जो विभिन्न मोर्चों पर अंग्रेजों के साथ लड़े थे। विभिन्न क्षेत्रों और समुदायों से आए भारतीय सैनिकों ने अपनी स्वतंत्रता से वंचित होने के बावजूद दूसरों की स्वतंत्रता के लिए लड़ने के विरोधाभासों को देखा। युद्ध के अनुभव के साथ-साथ 1919 के मोंटागु-चेम्सफोर्ड सुधार जैसे उपायों के माध्यम से अंग्रेजों द्वारा किए गए अधिक स्व-शासन के वादे ने भारतीयों के बीच राजनीतिक अधिकारों के लिए मुखरता और मांगों की बढ़ती भावना को जन्म दिया।

इसके अलावा, युद्ध के आर्थिक तनाव ने भारत की सामाजिक-आर्थिक समस्याओं को बढ़ा दिया, जिससे व्यापक गरीबी और असंतोष फैल गया। युद्ध के दौरान और बाद में भारी कराधान, मुद्रास्फीति और अकाल ने ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों की शोषणकारी प्रकृति को उजागर किया, जिससे राष्ट्रवादी उद्देश्य के लिए समर्थन और बढ़ गया। महात्मा गांधी जैसे नेताओं ने कुशलतापूर्वक इन शिकायतों का फायदा उठाया और उन्हें ब्रिटिश शासन के खिलाफ असहयोग और सविनय अवज्ञा की व्यापक कहानी में पिरोया।

युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवादियों को अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी मांगों को स्पष्ट करने के लिए एक मंच भी प्रदान किया। एनी बेसेंट और बाल गंगाधर तिलक जैसे नेताओं ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम के लिए समर्थन जुटाने के लिए युद्ध पर वैश्विक ध्यान आकर्षित किया। उत्तरी अमेरिका और यूरोप में भारतीय प्रवासियों के बीच गदर आंदोलन के उद्भव ने भारतीय राष्ट्रवाद के अंतरराष्ट्रीय आयामों का उदाहरण दिया, क्योंकि प्रवासी समुदाय अपनी मातृभूमि को मुक्त कराने के लिए एकजुट हुए।

इसके अतिरिक्त, युद्ध के बाद के राजनीतिक परिदृश्य में नई विचारधाराओं और आंदोलनों का उदय हुआ जिसने भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन को और अधिक मजबूत किया। रूस में बोल्शेविक क्रांति और समाजवाद और साम्यवाद के सिद्धांतों ने भारतीय बुद्धिजीवियों और कार्यकर्ताओं के बीच लोकप्रियता हासिल की, जिससे औपनिवेशिक पूंजीवाद से परे सामाजिक और आर्थिक संगठन के वैकल्पिक दृष्टिकोण पेश हुए। इन विचारों का प्रभाव भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (समाजवादी) और भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी जैसे वामपंथी समूहों के गठन में देखा जा सकता है, जिन्होंने व्यापक राष्ट्रवादी आंदोलन के भीतर वैचारिक विविधता में योगदान दिया।

प्रथम विश्व युद्ध ने भारतीय राष्ट्रवाद के विकास और तीव्रता के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम किया, जिसने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष की रूपरेखा को नया आकार दिया। युद्ध ने ब्रिटिश उपनिवेशवाद के विरोधाभासों को उजागर किया, भारतीय सैनिकों और नागरिकों में समान रूप से असंतोष फैलाया और भारतीय राष्ट्रवादियों को अपनी मांगों को स्पष्ट करने के लिए एक वैश्विक मंच प्रदान किया। इसके अलावा, इसने नई विचारधाराओं और आंदोलनों के उद्भव को प्रेरित किया जिसने भारतीय राष्ट्रवाद के विमर्श को समृद्ध किया। हालाँकि स्वतंत्रता की राह लंबी और कठिन थी, प्रथम विश्व युद्ध के दौरान बोए गए बीजों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम की अंतिम जीत की नींव रखी।

सन्दर्भ:

1. बोस, सुगाता। "भारतीय राष्ट्रवाद के सौ वर्ष: प्रथम विश्व युद्ध के परिप्रेक्ष्य।" *द जर्नल ऑफ़ इंपीरियल एंड कॉमनवेल्थ हिस्ट्री*, वॉल्यूम। 42, नहीं. 4, 2014, पृ. 591-605।

2. सरकार, सुमित. *आधुनिक भारत, 1885-1947*. मैकमिलन, 1983.

3. ब्राउन, जूडिथ एम. *आधुनिक भारत: एशियाई लोकतंत्र की उत्पत्ति*। ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, 1994।

4. आनंद भट्टाचार्य द्वारा "भारतीय राष्ट्रवाद और प्रथम विश्व युद्ध" (भारतीय इतिहास कांग्रेस की कार्यवाही, खंड 71, 2010)

5. स्कॉट न्यूटन द्वारा "प्रथम विश्व युद्ध के दौरान भारतीय राष्ट्रवाद और 'विश्व सेनाएं' (आधुनिक एशियाई अध्ययन, खंड 24, संख्या 2, 1990)

6. डैनियल मार्स्टन द्वारा "द इंडियन आर्मी एंड द एंड ऑफ द राज

7. रामचंद्र गुहा द्वारा लिखित "गांधी: द इयर्स दैट चेंज्ड द वर्ल्ड, 1914-1948

8. "महान युद्ध की भारतीय आवाज़ें: सैनिकों के पत्र, 1914-1918" डेविड ओमीसी द्वारा संपादित

9. क्रिस्टोफर एलन बेली द्वारा "इंडियन सोसाइटी एंड द मेकिंग ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर

10. श्रीनाथ राघवन द्वारा "भारत का युद्ध प्रयास, 1914-1918" (इतिहास में युद्ध, खंड 17, संख्या 3, 2010)

11. जूडिथ एम. ब्राउन द्वारा "द इंडियन नेशनल कांग्रेस एंड वर्ल्ड वॉर I" (द जर्नल ऑफ इंपीरियल एंड कॉमनवेल्थ हिस्ट्री, खंड 5, संख्या 3, 1977)

12. रवींद्रनाथ टैगोर द्वारा "भारत में राष्ट्रवाद

13. बिपन चंद्रा द्वारा "स्वतंत्रता के लिए भारत का संघर्ष.!